कर्म भूमि 13

प्रेमचन्द के साहित्य पर केन्द्रित अर्द्ध वार्षिक पत्रिका

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान
PREMCHAND SAHITYA SANSTHAN

प्रेमाश्रम के 100 वर्ष

सम्पादक-सदानन्द शाही

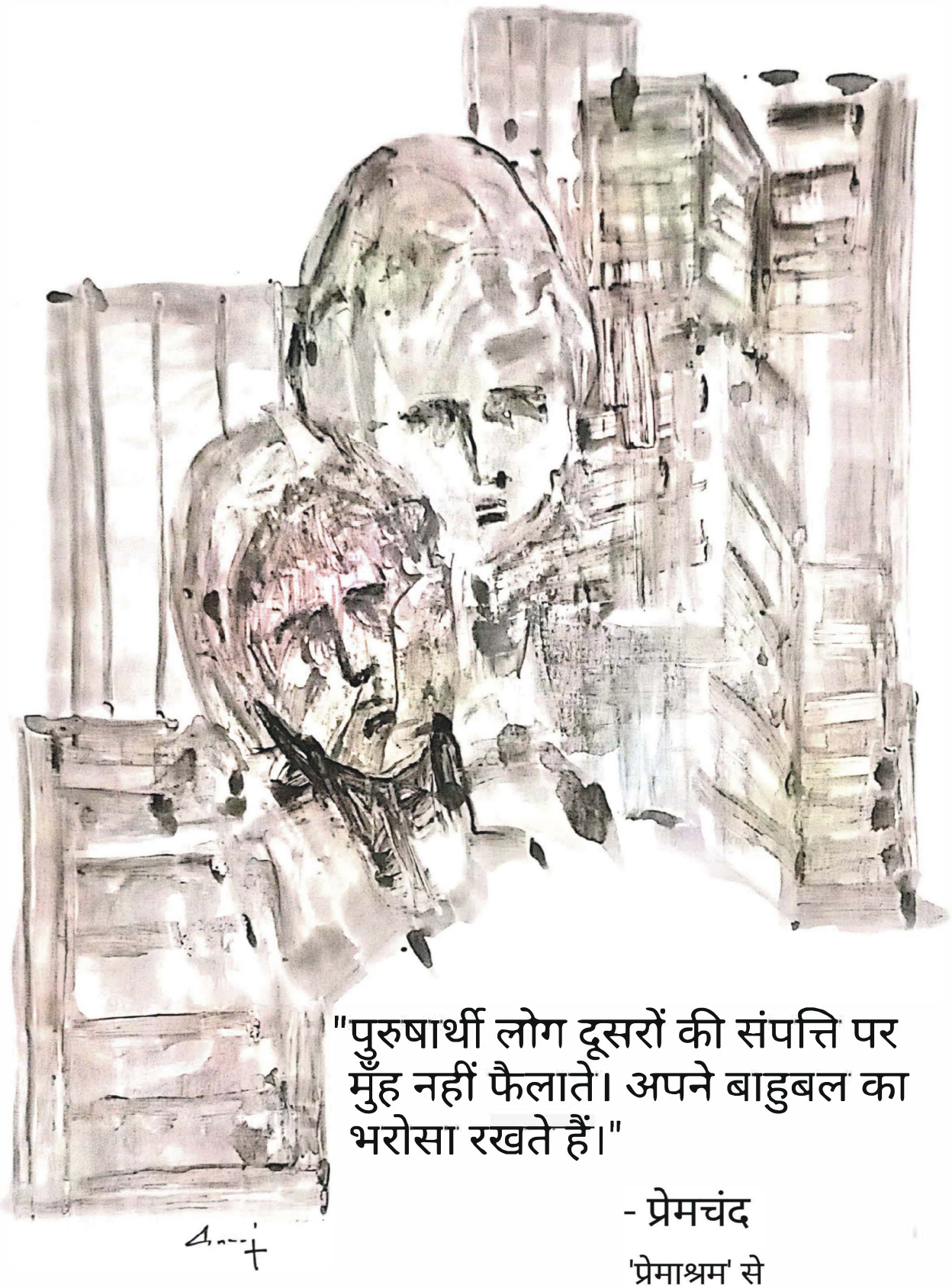

"पुरुषार्थी लोग दूसरों की संपत्ति पर मुँह नहीं फैलाते। अपने बाहुबल का भरोसा रखते हैं।"

- प्रेमचंद

'प्रेमाश्रम' से

कर्मभूमि

प्रेमचन्द के साहित्य पर केन्द्रित अर्द्धवार्षिक पत्रिका

अंक-13

दिसम्बर 2022

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान
PREMCHAND SAHITYA SANSTHAN

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान
प्रेमचन्द पार्क, बेतियाहाता–गोरखपुर द्वारा प्रकाशित

सम्पादक मण्डल

रामदेव शुक्ल

मदन मोहन

अनिल राय

राजेश कुमार मल्ल

मनोज कुमार सिंह

कपिलदेव

सम्पादक

सदानन्द शाही

सह-सम्पादक

सुजीत कुमार सिंह

शैलेन्द्र कुमार सिंह

सम्पादन सहयोग

हिमांशी गंगवार

सोनू शर्मा

पोस्टर

पंकज दीक्षित

आवरण

राहुल कुमार शॉ

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान

PREMCHAND SAHITYA SANSTHAN

सहयोग राशि

₹ 100/- मात्र

(संस्थान के सदस्यों के लिए निःशुल्क)

संस्थान की वार्षिक सदस्यता

₹ 500/- मात्र

सहयोग, सदस्यता एवं पत्रिका प्राप्ति हेतु दिये गये खाते में धनराशि जमा कर मो. 7275466771 पर सूचित करें :

A/c No : **20189318519**

Bank : **Indian Bank**

Branch : **Gorakhpur University, Gorakhpur**

IFSC Code : **IDIB000G616**

MICR Code : **226019050**

प्रेमचन्द जी का नया उपन्यास है, अभी हाल में प्रकाशित हुआ है। ६५५ पृष्ठों में यह पूरा हुआ है। अच्छे टाइप में अच्छे काग़ज पर यह छपा है। खद्दर की सुंदर जिल्द बँधी है। कलकत्ते (१२६ हरिसन रोड) की हिंदी पुस्तक एजेंसी ने इसे प्रकाशित किया है। मूल्य ३।।) है। हमारी समझ में प्रेमचन्द जी की विशेषता यह है कि उनके सभी पात्र मनुष्य होते हैं। न तो उनमें कोई अद्‌भुतकर्मा संन्यासी होता है और ना कोई दिव्यशक्ति संपन्न महात्मा रहता है। अधिकांश लेखक अपनी सम्मति को सर्वोपरि मानकर एक निश्चित आदर्श के अनुसार अपने पात्रों की सृष्टि करते हैं। प्रेमचन्द जी की रचना में हम यह बात नहीं पाते। वे अपने पात्रों को स्वच्छंद चलने देते हैं और जो परिणाम होता है उसे पाठक स्वयं देख लेते हैं। इसमें पति-पत्नी का प्रेम वर्णित है, उद्दाम वासना का भी चित्र है, किसानों की दुर्दशा का वर्णन है, जमींदारों के द्वारा किये गए उत्पीड़न की चर्चा है, परंतु भाषा सर्वत्र संयत है। लेखक को अपने उत्तरदायित्व का पूरा ज्ञान है। आज कल के उपन्यास लेखकों की तरह उन्होंने न तो कहीं औपन्यासिक प्रेम का वर्णन किया और न औपन्यासिक अत्याचारों का। इसमें समाज का यथार्थ चित्रण है। कथा बड़ी हृदय-ग्राहिणी है। हमें विश्वास है कि हिंदी साहित्य के प्रेमी इसका उचित आदर करेंगे।

'पुस्तक परिचय' स्तंभ, सरस्वती, जून १९२२, भाग २३, खण्ड १, संख्या ६, पूर्ण संख्या २७०

अनुक्रम

अध्यक्ष की कलम से

'प्रेमाश्रम' उपन्यास के सौ वर्ष / रामदेव शुक्ल 04

सम्पादकीय

प्रेमाश्रम : एक वैकल्पिक स्वप्न का प्रस्ताव / सदानन्द शाही 05

- प्रेमाश्रम की दो आरम्भिक समीक्षाएँ / *प्रस्तुति : सुजीत कुमार सिंह*
  1. रघुपति सहाय फिराक 07
  2. कालिदास कपूर 17

- प्रेमाश्रम की पाठकीय समीक्षा / वीर भारत तलवार 22
- प्रेमाश्रम : भारतीय संस्कृति के विविध रूप / रामविलास शर्मा 29
- प्रेमाश्रम : गाँवों की ओर एक निर्णायक कदम / विश्वनाथ एस. नरवणे 36
- प्रेमचन्द के साहित्य में किसानी समस्या / गीतांजलि श्री 43

●

‘प्रेमाश्रम’ उपन्यास के सौ वर्ष

■ रामदेव शुक्ल

राज्यसभा के सदस्य, प्रतिष्ठित लेखक-पत्रकार बनारसीदास चतुर्वेदी के नाम पत्र में प्रेमचन्द ने लिखा—‘‘मेरी आकांक्षाएँ कुछ नहीं हैं। इस समय तो सबसे बड़ी आकांक्षा यही है कि हम स्वराज्य-संग्राम में विजयी हों। धन या यश की लालसा मुझे नहीं रही। खाने भर को मिल ही जाता है। मोटर और बंगले की मुझे हवस नहीं। हाँ, यह जरूर चाहता हूँ कि दो-चार ऊँची कोटि की पुस्तकें लिखूँ, पर उनका उद्देश्य भी स्वराज्य-विजय ही है।’’ नेशनल बुक ट्रस्ट से नेहरू बाल पुस्तकालय के लिए अमृत राय द्वारा लिखी ‘प्रेमचन्द’ नामक पुस्तिका में उल्लेख है कि ‘‘राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं की उनकी प्रतिक्रिया बिजली की सी तेजी से होती थी। ध्यान देने की बात है वे इस देश के उन पहले लोगों में थे जिन्हें रूस की समाजवादी क्रांति ने छुआ और जिन्होंने उसके ऐतिहासिक महत्त्व को समझा। उस समय प्रेमचन्द अपने जिस उपन्यास पर काम कर रहे थे—‘प्रेमाश्रम’ का मूल उर्दू रूप ‘गोशए आफियत’—उसमें इस क्रांति के लगभग छः महीने बाद ही, उन्होंने बहुत अच्छे शब्दों में उस क्रांति को सराहते हुए उसका हवाला दिया है। ... अपने एक मित्र को 21 दिसंबर 1919 को लिखा कि, ‘‘मैं तो अब लगभग बोल्शेविक उसूलों का कायल हो गया हूँ। ... ‘मांटेग्यू चेम्सफोर्ड रिफार्म्स स्कीम’ के सुधारों में अगर कोई विशेषता है तो यही कि शिक्षित वर्ग को कुछ आसानियाँ ज्यादा मिल जायेंगी और जिस तरह यह वर्ग वकील बनकर जनता का खून पी रहा है, उसी तरह आगे चलकर यह हाकिम होकर जनता का गला काटेगा।’’

‘प्रेमाश्रम’ पहले विश्वयुद्ध (1914-1919) के बाद के दौर का उपन्यास है। यूरोप की बड़ी-बड़ी ताकतों ने युद्ध के जरिये अपना संकट हल करने की कोशिश की, लेकिन युद्ध से संकट हल नहीं हुआ। गुलाम देशों की हालत और बुरी हो गई। वहाँ की जनता को और भी दबाकर रखने के लिए पश्चिमी ताकतों ने ज़ोर बढ़ाया। आजादी चाहने वाली जनता को रौलट कानून और जलियाँवाला बाग मिला। ... लेकिन दूसरों को गुलाम बनाने वाले अब पहले जैसे ताकतवर न थे। ... उनमें खासतौर से डर पैदा हो गया था, सोवियत रूस से। उस देश में मजदूरों और किसानों ने जमींदारों और पूंजीपतियों का राज खत्म कर दिया है—यह ख़बर दुनिया के सारे देशों में फैल गई थी।

‘प्रेमाश्रम’ अवध प्रांत के गाँव लखनपुर की कथा है। वहाँ के बेगार करने वालों, हल जोतने वालों, प्लेग और सरकार का मुकाबला करने वालों को प्रेमचन्द ने नायक बना दिया है। मनोहर, बलराज, कादिर, दुखरन आदि इस उपन्यास के हीरो हैं। डॉ. रामविलास शर्मा ‘प्रेमचन्द और उनका युग’ में लिखते हैं कि